- यदि कोष्ठकों में कई रानी तैयार हो रही हों तो एक को छोडकर अन्य सभी को नष्ट कर दें।
- रानीद्वार (क्वीन केज) का प्रयोग करें। ताकि रानी को बाहर जाने से रोका जा सके।

➢ **वकछूट को पकड़नाः**– वकछूट साधारणतः अच्छे मौसम में 10–2 बजे दिन में होता है। इसमें मौनें अपने पेट में शहद भर कर पुराने मौन गृह के बाहर 100 मीटर के क्षेत्र के भीतर 24 घंटे तक रहती हैं। 24 घंटे के बाद ये उस स्थान को छोड़कर अन्य स्थानों पर चली जाती हैं।

इसके लिए यह आवश्यक है कि वकछूट को 24 घंटे के अन्दर पकड़कर मौन गृह में रख दिया जाय। इसके लिए वकछूट टोकरी का प्रयोग करें तथा उसमें थोड़ा शहद लगााकर उसे झुंड के पास टाँग दें। शहद के कारण पूरा झुंड टोकरी में आ जाता है। इनको वापस लाकर नये बक्से, जिसमें ब्रूड होता है उसमें डाल दें।

➢ **श्रमिक द्वारा शहद की चोरीः**– यह देखा गया है कि शक्तिशाली मौनवंश कमजोर मौनवंश पर आक्रमण कर शहद की चोरी करते हैं। इस समय प्रकृति में पराग तथा मकरन्द का अभाव होता है।

- सभी मौनवंशों को कृत्रिम भोजन एक साथ दें।
- सभी मौनवंशों की संख्या लगभग एक सी हो।
- मुख्य द्वार को छोटा कर इस समस्या से बचा जा सकता है।
- मुख्य द्वार के अलावा अन्य छिद्र को बन्द कर दिया जाय।

➢ **मौनवंशों को मिलानाः**– यदि मौनवंश कमजोर होता है तो शरद ऋतु में मौनवंश के मरने का खतरा अधिक हो जाता है। इसके लिएः–

- कमजोर मौनवंशों को शक्तिशाली मौनवंश में मिला दें। ताकि कमजोर मौन वंशों को मरने से बचाया जा सके। इसके लिए कमजोर मौनवंश की रानी को मार कर मौनगृह को ब्रूड तथा शहद सहित शक्तिशाली बक्से के शिशु खण्ड के ऊपर जिस पर एक अखबार या पेपर रखा हुआ हो एवं उसमें बारीक छेद किये गये हों, पर रख दें तथा कुछ बूँद शहद के घोल का छिड़काव कर दें। एक–दो दिन के पश्चात् फेरोमोन का आदान–प्रदान करने से मधुमक्खियाँ एक दूसरे से परिचित हो जाती हैं तथा अखबार को काटकर खण्ड में प्रवेश कर जाती हैं।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
डॉ. एस.एस. सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : +91–789746699
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशितः
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/73

मधुवाटिका का प्रबन्धन

विजय कुमार मिश्रा, ऊषा, सोनिया देवी,
सुन्दर पाल, योगेन्द्र कुमार मिश्रा, हरीचन्द,
एस.के. चतुर्वेदी एवं एस.एस. सिंह

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

मधुवाटिका का प्रबंधन

परिचय

मधुमक्खी, कीट अपने जीवन निर्वाह की लिए फूलों से रस और परागकणों को इकठ्ठा कर शहद में परिवर्तित कर अपने छत्ते में भण्डारित करता है ताकि आने वाले शुष्क समय में उसका उपयोग कर कठिन समय में उसका जीवन जीवित बना रह सके। मधुमक्खी परागण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने से साथ फसल उत्पादन में भी वृद्धि करती है। अतः मधुमक्खी पालन को फसल उत्पादन के साथ आसानी से किया जा सकता है। समय के साथ बदलने वाले मौसम के अनुसार इसकी देख रेख भी जरूरी होती है। मधुमक्खियों को पराग तथा मकरन्द पूरे वर्ष भर नहीं उपलब्ध होता है। इसके लिए पूरे वर्ष भर मधुमक्खियों का प्रबन्धन बहुत आवश्यक है। ताकि हमें शहद पूरे वर्ष भर प्राप्त हो सके। जिसके लिए अलग–अलग ऋतुओं में अलग–अलग कार्य होते हैं। मधुमक्खीपालन करने के लिए किसानों को उनके प्रबन्धन के बारे में भी ज्ञान होना अनिवार्य है। अतः हम मधुमक्खी पालन के प्रबन्धन से जुड़ी बातों के बारे में अध्ययन करेंगे।

मौसमी प्रबन्धन

➢ **बसन्त ऋतुः**– यह ऋतु शरद् ऋतु के बाद आती है। इस समय मधुमक्खियों को पराग तथा मकरन्द भरपूर मात्रा में वातावरण में प्राप्त होता है। और श्रमिक मधुमक्खियाँ अधिक से अधिक मात्रा में पराग तथा मकरन्द अपनी छत्तों में ले जाती हैं। जिस कारण मौनों की संख्या बढ़ जाती है। इस मौनों की उचित देखभाल अति आवश्यक है।

- माइट के नियंत्रण के लिए मौन गृह के बाहर सफेद पेन्ट कर दें।
- मौन गृह में नर की संख्या बढ़ जाये, तो नर प्रपंच का प्रयोग करें। ताकि छत्ते पर शहद भर जाने पर उसका उचित निष्कासन किया जा सके।
- मधुमक्खियों को शहद के भण्डारण के लिए आवश्यकता के अनुसार और फ्रेम दें।

- रानी को रोकने वाले पट (क्वीन एस्कलूडर) का प्रयोग करें ताकि रानी मधुमक्खि केवल ब्रूड क्षेत्र में ही रहे और वकछूट की सम्भावना न होने पाये।
- हनी प्ले–सीजन से पहले उन्हें चीनी का घोल दें। ताकि हनी प्लो–सीजन से पहले मौनगृहों में मौनों की संख्या बढ़ जाए ।
- शक्तिशाली मौनवंशों को 2–3 मौनवंश में बाँट दें और नई रानी बनाने की तकनीक द्वारा उसे नई रानी दें।

➢ **ग्रीष्म ऋतु** :– इस ऋतु में तापमान लगभग 40 डिग्री सेन्टीग्रेट से ऊपर चला जाता है। इस मौसम में प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए।

- मौन गृहों को किसी छायादार स्थान में रखें। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि सूर्य का प्रकाश मौनगृहों तक पहुँच पाये।

- साफ तथा बहते पानी की व्यवस्था करें। ताकि मौनों को आवश्यकता के अनुसार साफ पानी प्राप्त हो सके।
- यदि छायादार स्थान न हो तो बक्सों के ऊपर पुआल डालकर या छप्पर डालकर उसे सुबह–शाम पानी से भिगोते रहें। जिससे मौनगृहों का तापमान बना रहे।
- चीनी तथा पानी का घोल (50 प्रतिशत भाग चीनी तथा 50 प्रतिशत भाग पानी) दें।
- मौनों को भोजन के लिए पराग दें।
- मौनों को लू से बचाने के लिए बाड़ का प्रयोग करें।
- मौनगृह के स्टैण्ड की कटोरियों के पानी को प्रतिदिन साफ करके ताजा पानी भरें।

➢ **शरद ऋतु** :– मौनंवशों को सर्दी से बचाना अति आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए :–

- अक्टूबर माह में टाट की बोरी की दो तह को आन्तरिक ढक्कन के नीचे बिछा दें।
- मुख्य द्वार को खुला रखें।
- मौनगृहों को धूप वाले स्थानों पर रखें। ताकि मधुमक्खियाँ अपना कार्य सुचारू रूप से कर सकें।
- मौनगृह में मौनों की संख्या अधिक बनी रहे और वे कमजोर ना हों इसके लिए मौनगृहों को आवश्यकतानुसार शहद तथा चीनी का घोल 50:50 दें।
- मौनगृहों को फूलों तथा पराग वाले स्त्रोतों के पास रखें। ताकि श्रमिक मधुमक्खियाँ अधिक से अधिक पराग तथा मकरन्द एकत्रित कर सकें।
- शक्तिशाली मौनवंशों को 2–3 मौनवंशों में बाँट दें और नयी रानी बनाने की तकनीक द्वारा उसे नई रानी दें।

➢ **वकछूटः**– भारतीय मौनों में यह प्रक्रिया पायी जाती है। जबकि यूरोपियन या इटेलियन मौनों में यह प्रक्रिया कम होती है। इस प्रक्रिया में मौनें अपना पुराना गृह छोड़कर नये गृह की खोज में बाहर निकल जाती हैं। इसका कारण सामान्यतः मौनगृहों में स्थान की कमी, भोजन की कमी या बीमारी का प्रकोप हो सकता है। इसकी रोकथाम के लिए विभिन्न उपाय किये जाने चाहिए:–

- मौनगृहों में एक रानी के अलावा अन्य रानी कोष्ठकों को नष्ट कर दें।
- मौनों की संख्या बढ़ने पर उन्हें अतिरिक्त फ्रेम दें।
- यदि रानी पुरानी हो गयी हो तो उसे मार दें। क्योंकि उसमें अण्डे देने की क्षमता कम हो जाती है।